L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- III
PAPER - VIII
PSYCHOLOGY (HONOURS)
TOPIC - Functionalism
as a system.

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assitant Professor,
Guest Teacher
V.S.J. college, Rajnagar,
Madhubani (BIHAR)
pramodkumarsahu2018
@gmail.com.

एक सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद :- जैसे कि ऊपर कहा जा चुका है, एक सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद की शिकागो विश्वविद्यालय में उस समय अपनी प्रौढ़ता के शिखर पर था जब कार मनोविज्ञान के अध्यक्ष थे। सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद के सिद्धान्तों को कार के विचारधाराओं को आधार मानते हैं, क्योंकि उनकी पुस्तक (Psychology: A study of mental Activity) में प्रकाशित है। निम्नलिखित चार भागों में बाँटकर प्रस्तुत किया जा सकता है।

① मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु :- कार के अनुसार मनोविज्ञान मानसिक क्रिया या अनुकूली व्यवहार (adaptive behaviour) का अध्ययन करता है। अतः मनोविज्ञान में अनुकूली व्यवहार एक मुख्य संप्रत्यय है। इसमें प्रत्यक्षण, स्मृति, भाव, चिन्तन एवं इच्छा आदि प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं, जो प्रक्रियाओं से व्यक्ति को वातावरण में समायोजन करने में मदद मिलती है। इस तरह कि मनोविज्ञान की अध्ययन के तथ्यों या अन्तर्वस्तु (content) है न कि सिर्फ प्रतिमाओं से होती है। कार ने चेतन की प्रकृति के प्रधान एवं अनुकूली संप्रत्यय माना है। यह अनुकूली संप्रत्यय के रूप में व्यक्ति प्राणी को पर्यावरण के साथ समायोजित करने में कुछ मदद नहीं करती है। यदि अनुकूली व्यवहार पर कोई ध्यान नहीं देता है। यह स्वतः ही यह स्पष्ट हो जाता है कि कार प्रकार्यवादी मनोविज्ञान को व्यवहार के

Ajanta PRODUCTS Oxford
Scanned with CamScanner

नतीजे को पकड़ने में सफल हुए।
स्किनर का मत था कि अनुकूलित व्यवहार के तीन गुण होते हैं। जो निम्नलिखित है।

(i) इस तरह के व्यवहार में एक अभिप्रेरणा उद्दीपक होता है।
(ii) इस तरह के व्यवहार में एक पुनर्बलन उद्दीपक होता है।
(iii) इस तरह की अनुक्रिया परिस्थिति को इस ढंग से परिवर्तित कर देती है कि उससे अभिप्रेरणा उद्दीपक की संतुष्टि हो जाती है।

यदि कोई भूखा व्यक्ति होटल में जाकर भरपेट भोजन करता है तो उसका यह व्यवहार अनुकूलित व्यवहार का उदाहरण है। इस उदाहरण में भूख एक अभिप्रेरणा उद्दीपक है। भोजन एक पुनर्बलन उद्दीपक है तथा भोजन करना एक अनुकूलित व्यवहार का उदाहरण है। उद्दीपक के रूप में अभिप्रेरणा व्यक्ति के व्यवहार को तब तक प्रभावित करता जाता है, जब तक कि प्राणी के लिए वह उद्दीपक अधिक प्रभावी नहीं रह जाता है। इस तरह से क्रिया है। जिसके पहले अनुकूलित क्रिया द्वारा अभिप्रेरणा उद्दीपक समाप्त हो जाते हैं।

(i) पहला तरीका तो वह है, जिसमें अनुकूलित व्यवहार अभिप्रेरणा को सीधे हटाने में सफल हो जाता है, जैसे भोजन करने से भूख समाप्त हो जाती है।

(ii) दूसरा अनुकूलित व्यवहार के होने से अभिप्रेरणा स्वतः आप, अपने-आप खत्म हो जाती है। क्योंकि इससे और भी अधिक अभिप्रेरणा उद्दीपक उत्पन्न हो जाते हैं, जैसे एक व्यक्ति जो कड़ी धूप में ~~लक~~ लकड़ी काटता हो, समझता है कि थककर वह लकड़ी काटना ही छोड़ दे।

(iii) अनुकूलित व्यवहार के कुछ ऐसे पुनर्बलन परिणाम होते हैं, जिनसे अभिप्रेरणाएं अपने आप समाप्त हो जाती हैं। जैसे किसी व्यक्ति का हाथ जब गर्म बर्तन से स्पर्श हो जाता है, तो वह उसे हाथ से छोड़ देता है, क्योंकि उसके अंगुलियों में जलन होने लगती है।

Scanned with CamScanner

(iii)

उन्नततर प्राणियों व प्रेक — मनुष्यों में कार्य कि अनुकूली व्यवहार को दो मुख्य भागों में बाँटा है। प्रथम भाग वह है। जिसमें व्यक्ति स्वाभाविक समायोजन करता है। जिसमें वांछित प्रकार व्यवहार तथा उपयुक्त संवेदी समायोजन होता है। दूसरे भाग में व्यक्ति पर प्रकृति के बाद उपयोगी करने का व्यवहार होता है। मैकडूगल ने अनुकूली व्यवहार के दो तरह के परिणामों की भी व्याख्या किए है। अनुकूली व्यवहार का एक स्वाभाविक परिणाम तृप्ति है। क्योंकि इससे अभिप्रेरित उद्दीपक का समाधान होता है। व्यक्ति शरीर को इससे संतोषजनक होता है। किन्तु कि इस बात पर बल दिया कि अनुकूली व्यवहार को व्यक्ति इस सन्तोष परिणाम के रूप में नहीं बल्कि स्वयं अभिप्रेरणा के रूप में देखा जाना चाहिए। मैकडूगल भूखा व्यक्ति भोजन करते है। कि स्वयं भोजन रहता है। कि इससे संतोष हो करते है। कि इसे शरीर को संपोषित करना है।

(ii) अभिगृहीत (postulates) :- यद्यपि मैकडूगल की कोई निश्चित अभिगृहीत नहीं थी मनोवैज्ञानिक क्रियाओं के बारे में मनोविश्लेषकों ने कुछ पूर्वकल्पनाएँ कर रखी है। मार्क्स तथा ग्रसमार्क - हिलगार्ड के अनुसार ऐसी पूर्वकल्पनाएँ या अभिगृहीत निम्नलिखित है।

(i) सभी क्रियाओं की उत्पत्ति किसी न किसी संवेदी उद्दीपक से होती है। तथा संवेदी उद्दीपकों की अनुपस्थिति में कोई अनुक्रिया नहीं हो सकती है।

(ii) सभी संवेदी उद्दीपक से सिर्फ अभिप्रेरणा ही नहीं बल्कि व्यवहार भी प्रभावित होते है।

(iii) प्रत्येक व्यवहार आन्तरिक रूप से अनुकूल एवं उद्देश्यपूर्ण होता है।

(iv) व्यवहार एवं सतत एवं समन्वित प्रक्रिया होती है। और इससे उद्दीपक परिस्थिति में परिवर्तन होता है।

(3) कार्य-प्रणाली विधि - (Methodology) - कार ने मानसिक क्रियाओं के अध्ययन के लिए कई विधियों का प्रतिपादन किया है, वे संरचनावादियों के अन्तर्निरीक्षण विधि को स्वीकार किया परन्तु इसके साथ-ही साथ सामान्य प्रेक्षण को भी महत्वपूर्ण बतलाया। कार का मत था, कि प्रयोगात्मक विधि भी एक प्रमुख विधि है, परन्तु साथ-साथ उन्होंने यह आशंका भी व्यक्त किया कि मनुष्यों के साथ प्रयोग में यह विधि अधिक ठीक नहीं हो सकती है, क्योंकि मनुष्यों की क्रियाओं पर पूर्ण नियंत्रण जो इस विधि की सफलता के लिए आवश्यक है, सम्भव नहीं है। इस तरह से प्रकार्यवादियों द्वारा तीन विधियों को स्वीकृत किया गया है। अन्तर्निरीक्षण, सामान्य प्रेक्षण तथा प्रयोग।

(4) मन-शरीर सम्बन्ध (Mind-body problem) - कार ने मन शरीर सम्बन्ध की एक काफी स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने मानसिक क्रिया को मनोदैहिक माना है। मानसिक क्रिया को इस अर्थ में मनोवैज्ञानिक या मानसिक माना जाता है क्योंकि व्यक्ति को इस क्रिया के करने का पूरा आभास होता है। इस आभास के अभाव में वह उस वस्तु का प्रत्यक्षण चिन्तन आदि नहीं कर सकता है।

Dr. Pramod Kumar Sekhar
Date- 17/08/2020
Sub- Psychology

Scanned with CamScanner